वेद

1. आर्यों के सम्बन्ध में हमारी जानकारी का आधार अनेक पवित्र साहित्य वेद है।

2. वेद न केवल भारतीय आर्यों के बल्कि हिन्द-जर्मन नाम से पुकारे जाने वाले समस्त आर्य समूह के प्राचीनतम ग्रंथ है। समस्त विश्व साहित्य में इनका विशिष्ट स्थान है।

3. वेद को 3000 वर्ष से भी अधिक काल से लाखों करोड़ हिन्दु अपौरुषय अर्थात ईश्वर वाक्य मानते चले आ रहे है निरन्तर परिवर्तन और विकास होते रहे पर सदा ही हिन्दु संस्कृति एवं धर्म के आधार वेद ही रहे हैं

4. यद्यपि वैदिक साहित्य के रचयिता ऋषि मुनी है किन्तु धार्मिक हिन्दु इनकी उत्पती दैवी माध्य पर जोर देते है उनका कहना है कि इन ऋचाओं की रचना ऋषियों ने नही की बल्कि उनके माध्यम से वे प्रगट हुई है इस प्रकार वेद अपौरुषय और नित्य कहे जाते है

5. जिन ऋषियों के नाम से वे ज्ञात है वे मंत्रद्रष्टा कहे जाते है अर्थात जिन्होंने स्वयं परमात्मा से मंत्रों को देखा

6. वेद की पवित्रता सम्बन्धि विचार हिन्दु धर्म के मुल भूत सिध्दान्त रहे है जो धार्मिक सम्प्रदाय इस बात को नही मानता उनके लिये हिन्दु धर्म में कोई मान्य स्थान नही है

7. वेद शब्द का अर्थ "ज्ञान", "महत् ज्ञान" अर्थात पवित्र एवं आध्यात्मिक ज्ञान

8. वेद न तो कुरान की तरह किसी एक व्यक्ति की साहित्यिक कृति है और न ही बाइबील और त्रिपिटक की तरह किसी एक काल में कुछ निश्चित पुस्तकों से इनका संकलन किया गया है यह तो ऐसा साहित्यीक भण्डार है जो अनेक शताब्दियों

के बीच विकसित हुआ है और जिसे पिढ़ी दर पिढ़ी लोग कण्ठस्थ कर सुरक्षित रखते आये है।

9. वैदिक साहित्य के अन्तर्गत तीन प्रकार की साहित्यीक रचनाएं आती है इनमे प्रत्येक वर्ग मे अनेक स्वतंत्र अनेक पुस्तके है, जिनमे से कुछ का अस्तित्व तो अब भी है परन्तु कुछ लुप्त हो चुकी है।

ये तीन वर्ग इस प्रकार है —

[A-] संहिता अथवा मंत्र — इस साहित्य में मंत्रो, प्रार्थनाओं वशिकरणो, प्रार्थना विधियों और यज्ञ विधियों का संग्रह है।

[B] ब्राह्मण ग्रंथ — ये विशाल ~~गद्य~~ गद्य ग्रंथ है जिनमे मंत्रो के अर्थों पर विचार किया गया है, उनके प्रयोग का विधान बताया गया है, यज्ञ विधान से सम्बन्धित उनके उत्पती की कहानियां कही गयी है और यज्ञो का गुप्त रहस्य प्रगट किया गया है संक्षेप मे इनमे एक प्रकार से ब्राह्मणो का आदिम धर्म और दर्शन सुरक्षित है।

[C] आरण्यक और उपनिषद — इनमे से कुछ तो ब्राह्मणो मे ही निहित है अथवा उनसे सम्बध है और कुछ स्वतंत्र रचना के रूप मे पाया जाता है इनमे आत्मा, परमात्मा, संसार और मनुष्य सम्बन्धि ऋषि मुनियों के दार्शनिक विचार आबध है।

10. विभिन्न समुदायों के पुरोहितों और सूतों मे बहुसंख्यक संहिताए प्रचलित रही होगी किन्तु अधिकांश एक ही संहिता के विभिन्न पाठ है तथापि चार ऐसी संहिताए है जो एक दुसरे से भिन्न है और जिनमे से प्रत्येक के अनेक पाठ हमे प्राप्त है —

A — ऋग्वेद संहिता —— मंत्रो का संग्रह

B — सामवेद संहिता —— गेय पदो का संग्रह जिनमे अधिकांश मंत्र ऋग्वेद के है

C — यजुर्वेद संहिता —— यज्ञ विधियों का संग्रह (इस संग्रह के दो स्पष्ट भेद है — कृष्णयजुर्वेद - शुक्ल यजुर्वेद

D अथर्ववेद संहिता — जादू और मानस हरणो का संग्रह

11 ये चारों संहिताएं चार विभिन्न वेदो के आधार है तथा वैदिक साहित्य के दूसरे और तीसरे वर्ग की प्रत्येक प्रकार की रचनाओं अर्थात ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद मे से एक का वर्णन के किसी न किसी एक संहिता के साथ सम्बन्ध है और वह उस विशेष वेद की सम्बन्ध रचना मानी जाती है।

इस प्रकार ऋग्वेद की न केवल अपनी संहिताए है वरण ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद भी है यही बात अन्य तीनो वेदो के सम्बन्ध मे कही जा सकती है।

12 - इस विस्तृत साहित्य की रचना वेद की श्रेणी मे गीनी जाती है और उनके कर्ता ऋषि कहे जाते है कभी2 इन ऋषियों के नाम से किसी एक व्यक्ति का तात्पर्य न होकर वर्ग से होता है जैसे विश्वामित्र की कही जाने वाली मन्त्रचार सम्भवत उस नाम के किसी एक ही व्यक्ति द्वारा न रची जा कर उस परिवार अथवा सम्प्रदाय के विभिन्न व्यक्तियों द्वारा रची गयी। यहां यह बात उल्लेखनीय है कि ऋचाओं के रचयिताओ मे स्त्रियां और निम्नतम वर्ग के लोगों के भी नाम मिलते है।

Note वेद नाम से पुकारे जाने वाले उपर्युक्त अपौरुषेय साहित्य के अतिरिक्त वैदिक साहित्य का एक अन्य अंग भी है। जो सूत्र अथवा "वेदांग" कहलाता है उसे वेदो की बराबरी इसलिए प्राप्त नही है क्योकि वे मानव रचित है यही बात उपवेद के सम्बन्ध मे भी है

//